चतुर्थ अध्याय

-: पचपन खम्भे लाल दीवारें - उपन्यास में चित्रित परिवार का स्वरूप :--

अध्याय चतुर्थ

' पचपन खम्भे लाल दीवारें ' उपन्यास में चित्रित परिवार का स्वरुप --

' पचपन खम्भे लाल दीवारें ' उपन्यास में चित्रित परिवार है । '

मेरे लघुशोध प्रबंध का विषय -' पचपन खम्भे लाल दीवारें ' उपन्यास में चित्रित परिवार है । ' जिसमें परिवार का समग्र चित्रण होता है । जीवन का समग्र चित्र होने के कारण ही प्रबन्ध में पारिवारिक जीवन के यथार्थ और सजीव चित्र उभरे है -- कही सीधे,तो कहीं संबंधों और सन्दर्भों के माध्यम से परिवार जैसी प्राथमिक एवं सर्वव्यापी सामाजिक संस्था का उद्भव निश्चय ही मनुष्य की सहज जैविक आवश्यकताओं और आधारभूत सामाजिक वृत्तियों से हुआ है । समाज में परिवार का महत्वपूर्ण स्थान है । समाज का निर्माण ही परिवारों से होता है । इसलिए यह माना जा सकता है कि --' परिवार मनुष्य की संस्थाओं में से सबसे प्राचीन संस्था है और जब तक हमारी नस्ल रहेगी, किसी न किसी रुप में परिवार का भी अस्तित्व रहेगा । '[१] तो प्रत्येक मनुष्य परिवार का सदस्य होता है । जन्म लेने के बाद उस पर सबसे पहला प्रभाव परिवार के परिवेश का होता है । उसके चरित्र गढन का कार्य भी परिवार में ही होता है । अर्थात मनुष्य के जीवन की बुनियाद परिवार में ही ही रची जाती है । फिर भी परिवार का आरंभ और उसके विकास के वे चरण जिनके माध्यम से वह अपने वर्तमान रुपों में विकसित होता है,अंधकार की पर्तों में दबे हुए है । मानव नस्ल के प्राचीनतम प्रतिनिधियों में भी किसी हद तक स्थायी यौन-सम्बन्ध ही परिवार की आधारशिला है । बच्चनजी की सहज शैली में कहें तो --' यौन आकर्षण से लैंगिकाकर्षण,लैंगिकाकर्षण से आत्मसंरक्षण और आत्मसंरक्षण से जाति-संरक्षण

---

१ लिंटन,राल्फ - दि नेचुरल हिस्ट्री ऑफ दि फैमिली - पृ.८० ।

की यात्रा में ही मनुष्य से विवाह संस्था की नींव डाली होगी। इसी प्रकार मनुष्य व्यक्ति-जीवन की अरक्षा से सामूहिक जीवन की अरक्षा की ओर गया होगा और सामूहिक जीवन को व्यवस्थित करने की प्रक्रिया में परिवार की नींव की नींद पड गयी होगी।"[२]

जैसे --" मनुष्य मरण धर्मा है,परंतु मानवजाति अमर है।"

व्यक्ति मले ही मर जाये पर परिवार और विवाह द्वारा मानव जाती अमर हो गयी है।"[३]

वासुदेव अग्रवाल के अनुसार --" स्त्री-पुरुष दोनों परिवार के मूल है। नदी के दो तटों की भाँति वे भी युक्त हैं। दोनों के बीच में जीवन की धारा प्रवाहित होती है, वैदिक साहित्य में स्त्री-पुरुष के सम्मिलन की उपमा पृथ्वी और द्युलोक से दी गयी है। जैसे शुक्ति के दो दलों के बीच में मोती की स्थिति होती है, वैसे ही स्त्री-पुरुष दोनों के मध्य में संतति है। द्यावा और पृथ्वी एकही संस्थान के परस्पर पूरक है। आकाशचारी मेघवृष्टि द्वारा पृथ्वी को गर्भ धारण कराते है तब वृक्ष-वनस्पतियों का जन्म होता है। यही स्थिति स्त्री-पुरुष या पति-पत्नी की है। वे दोनों दो होते हुए भी एक है।"[४]

परिवार इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि --" एक ओर जहाँ उसमें थकी हुई पीढी आश्रय पाती है,वहीं वह मावी पीढी का निर्माता भी है। परिवार में ही भूत, वर्तमान और भविष्य का साकार रुप निश्चित होता है,संक्षेप में परिवार मानव व्यक्तित्व की बीजभूमि है।"[५]

---

१ डॅा.हरिवंशराय 'बच्चन' नीड का निर्माण फिर, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली,पृ.२६४।

२ हरिदत्त वेदालंकार - हिंदू परिवार मीमांसा सरस्वती सदन,मसूरी,पृ.१।

३ श्री वासुदेव शरण अग्रवाल - हिंदू परिवार मीमांसा,भूमिका ,पृ.२२।

४ Kimbaly Young - Study of Society and Culture -p.313 , American Book Co., New York .

इसी प्रकार प्रस्तुत `पचपन खम्भे लाल दीवारें` उपन्यास में हर एक प्रकार के परिवार दिखाई देते है। इसलिए सभी प्रकार के परिवारों का विवेचन करना ही आवश्यक है। परिवार का अध्ययन करते समय सबसे बड़ी कठिनाई परिवार के विविध रुपों से होती है। क्योंकि एक ओर परंपरा से चला आ रहा संयुक्त परिवार है, तो दूसरी ओर पश्चिम के प्रभाव तथा आज के सामाजिक,आर्थिक दबावों से उभरता हुआ पति,पत्नी और बच्चों का नाभिक परिवार है। ये दोनों भी परिवार `पचपन खम्भे लाल दीवारें` उपन्यास में दिखाई देते है। उपन्यास की नायिका सुषमा उनका संयुक्त परिवार है और इसके अलावा मीरा दीदी ,नारायण,मीनाक्षी,दुर्गादी, मिसशास्त्री आदिओंका छोटा नाभिक परिवार है। सर्व प्रथम हम संयुक्त परिवार का विचार करेंगे।

परिवार का वर्गीकरण --

संयुक्त परिवार --

संयुक्त परिवार-प्रणाली हिन्दू सामाजिक जीवन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता है। यह प्रणाली अति प्राचीन है। संयुक्त परिवार वह कहलाता है जिसमें पिता,उसके पुत्र, उसकी पुत्रवधुएँ,भाई,भाभियाँ,पौत्र-पौत्रियाँ आदि सहनिवास करते है। वैसे ही परिवार की महिलाएँ या तो उस परिवार के किसी पुरुष-सदस्य की पत्नी होंगी या फिर किसी मृत संबंधी की विधवा पत्नी। उनका आहार, सामाजिक कार्य एवं अर्थोपार्जन आदि संयुक्त रुप में हो होता है। और सम्पत्ति का उत्पादन एवं उपभोग सम्मिलित रुप से होता है। संयुक्त परिवार के सभी सदस्य परिवार के मुखिया (कर्ता) के अनुसार अनुशासन में रहते है। इसलिए संयुक्त परिवार की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार है --`सह - निवास ,सहभोजन (एक रसोई ),सह-आराधना और परिवार की सामूहिक संपत्ति का सह-उपभोग।` ६

---

६ उषा मंत्री - हिन्दी उपन्यास में पारिवारिक संदर्भ -- नेशनल पब्लिशिंग हाऊस,२३,दरियागंज,नयी दिल्ली,द्वारा प्रकाशित, प्रथम संस्करण १९९१,पृ.८

प्रस्तुत 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उपन्यास में सुषमा का परिवार भी इसी प्रकार का है उसके परिवार में उसके माँ-बाप और दो बहनें जिनका नाम निरुपमा और प्रतिमा है। सुषमा के दो भाई है जिनका नाम संजय और विजय है। और साथ में मौसी भी रहती है। इस तरह उनका संयुक्त परिवार ही हुआ है। सुषमा के पिता रिटायर्ड हो चुके है और उसके पास जो भी पैसा था वह पिता की बिमारी और घर के खर्चों में खत्म हो गया। भाई- छोटे है, उनकी पढाई शुरु है इस कारण परिवार के भरण-पोषण की सारी जिम्मेदारी सुषमा को ही संभालनी पड़ती है और इसके लिए घर छोड़कर वह दिल्ली के कॉलेज में प्राध्यापिका बन जाती है। साथ ही घर के खर्चों को पूरा करने के लिए वह वार्डन का अतिरिक्त कार्य भी करती है। इस प्रकार से सुषमा का परिवार निम्नमध्यम वर्गीय परिवार है। इस प्रकार का परिवार समाज में हमें दिखाई देता है। सुषमा को एक कृतार्थता की भावना संतोष देती है। इसी प्रेरणा से वह अपनी मौसी से कहती है --'मेरा तो मन होता है कि मेरे पास अगर और कुछ होता तो और भी करती। .... अपने लिए तो सभी करते है। छोटे भाई-बहनों के लिए कुछ कर सकूँ, इस योग्य भी तो पिताजी ने ही बनाया है।'[७] सुषमा आधुनिक युग की है, किन्तु उसमें पारिवारिक जिम्मेदारी का इतना बोझ है उससे निकल न पाने के कारण वह अपना बलिदान कर देती है। परिवार की दयनीय स्थिति के कारण माता-पिता भी अपनी पुत्री के प्रति अपने उत्तरदायित्वों से विमुख हो जाते है। पिताजी पेंशन पर है मगर अप्रत्यक्ष रुप से वे ही घर के मुखिया लगते है क्योंकि बडी बेटी दिन भर काम पर रहती है उसकी तनखाह तथा पिता की पेन्शन पर ही पूरे परिवार का निर्वाह हो रहा है, तो खानेवाले दस और कमानेवाला एक ऐसा चित्र हमेशा संयुक्त परिवार में दिखाई देता है।

---

७ उर्मिला गुप्ता - स्वातंत्र्योत्तर कथा लेखिकाएँ, दिल्ली ओमप्रकाश राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, ६, प्र.सं. १९६७, पृ. १९५।

संयुक्त परिवार में सदैव कुछ न कुछ महत्वपूर्ण घटना घटित होती रहती है -- जन्मोत्सव, विवाहोत्सव और मृत्यु आदि, वैसे ही प्रस्तुत ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में वकील साहब के बेटे नारायण को जब बेटा होता है तब नामकरण विधि के वक्त सुषमा बच्चे के लिए चाँदी का झुनझुना उपहार के रुप में लेकर जाती है, उसी समय नारायण की पत्नी भी सुषमा का स्नेहपूर्ण स्वागत करती है। तो नारायण के परिवार में सभी लोगों के चेहरे पर खुशी ही खुशी दिखाई देती है।

वैसे ही विवाहोत्सव के वक्त निरुपमा की शादी बड़ी धूमधाम से होती और एक शादी, वकिल साहब के बेटे नारायण की शादी भी एक प्रतिष्ठित परिवार के बेटी से होती है तो उसी वक्त भी आनंद और उल्हास सभी जगह दिखाई देता था।

सामान्यता संयुक्त परिवारों में जीवन जटिल हो सकता है, कभी-कभी कटुतापूर्ण भी, परंतु वह ऊबाऊ नहीं होता, कम-से-कम बच्चों के दृष्टिकोण से तो बिलकुल नहीं। ` संयुक्त परिवार अपने-आप में एक लघु संसार होता है। यह लघु संसार कुछ कामों मेंतो और सबसे बिलकुल अलग-अलग होता है, जब कि कुछ कामों में यह भावात्मक संबंधों से जुडे ऐसे ही दूसरे संयुक्त परिवारों के साथ आदान-प्रदान और उपहार देने की अनंत रीतियों के माध्यम से अविभाज्य रुप से संबध्द होता है। `[८]

विभक्त परिवार --

एक समय था जब संयुक्त परिवार का वृक्ष लहलहाता था। ज्यों-ज्यों उस वृक्ष में नयी कोंपले व शाखायें निकलती थी, त्यों-त्यों उस वृक्ष की जड़ फैलती ही जाती थीं। यह संयुक्त परिवार रुपी वृक्ष सभी सदस्यों को सुरक्षा प्रदान करता था। आज समय की आँधी ने इस वृक्ष की जड़ों को हिला दिया है। समय के बढ़ते हुए कदमों के साथ संयुक्त परिवार टूटते जा रहे है और एकाकी परिवार का जन्म

---

८ इरावती कर्वे - किनशिप आर्गेनाइजेशन, पृ.१४।

होता जा रहा है। आज संयुक्त परिवार के विलगाव का दायित्व किस पर है ? क्या नयी और पुरानी पीढी की टकराहट है ? अथवा महिलाओं का वैचारिक संघर्ष सास-बहू के झगडे के रुप में या ननंद भाभी के झगडे के रुप में,अथवा परिवार के किसी सदस्य का निकम्मा होना,इसके अतिरिक्त मँहगाई भी परिवार को विभाजित करने में हाथ बँटाती है। वस्तुओं की कीमतों का रेखागणितीय क्रम मेंबढने के कारण संयुक्त परिवार के सभी सदस्यों की आवश्यकतायें पूरी नहीं हो पाती है, अत: वे अभावग्रस्त रहते हैं। अभाव को दूर करने के लिए भी संयुक्त परिवार बिखर जाते है। अथवा नौकरी के लिए परिवार के सदस्यों का पलायन होता है। आज विभक्त परिवारों की अधिकता है इसलिए उषा प्रियंवदाजी ने अपने 'पचपन खम्भे लाल दीवारें ' उपन्यास में विभक्त या केन्द्र परिवार का चित्रण किया है। जैसे मीरा-दीदी,का परिवार विभक्त परिवार है। क्योंकि विभक्त परिवार में माता-पिता और उनके अविवाहित बच्चे इतने ही सदस्य रहते है। तो इनके परिवार में मीरा-दीदी, उसके पति और एक बेटा तीन ही सदस्य है। वह परिवार समझौतावादी है। पति-पत्नी दोनों ही नौकरी करते है। उनमें सद्भाव स्नेह के अलावा मीरा दीदी तथा उसके पति दूसरों की सहायता करते है,उनकी समस्याएँ सुलझाने का प्रयास करते है,मीरा दीदी सुलझे विचारों की स्त्री है। मीरा दीदी सुषमा को विश्वास में लेकर उसके व्यक्तिगत जीवन के बारे में पूछती है कि सुषमा शादी क्यों नहीं कर लेती ? सुषमा का परिवार अंत्यत ही आर्थिक परिस्थितियों से बिकट है, सुषमा मजबूर है लेकिन अपने परिवार की यह स्थिति का दूसरों को पता न होने के कारण सुषमा शादी न होने की बात उठाकर विषय को टालना चाहती है लेकिन मीरा दीदी उसे समझाने का प्रयत्न करती है। क्योंकि सुषमा की पारिवारिक समस्या और आर्थिक कठिनाइयों से वे परिचित है,परंतु फिर भी सुषमा अपना जीवन नष्ट कर रही है , ऐसा उन्हें लगता है इसलिए वे अपनी निजी अनुभवों के आधार पर शादी की जरुरत का समर्थन करती है वह सुषमा को कहती है कि --

' अगर उसके पास सब कुछ है,तो वह कभी-कभी उकता क्यों जाती है ? मीनाक्षी,क्यों एक बिजनेस मैन से शादी करने जा रही है जब कि उसने सदा ही एक इंटलेक्च्युल

व्यक्ति की कामना की है ? दुर्गा अर्थात मिसशास्त्री क्यों हर एक को क्रिटिसाइज करती है और बिल्ली को कलेजे से लगा के हरदम फिरती रहती है। ये सब उसी गहरे अभाव के सूचक है।" [१]

स्त्री के जीवन के लिए किसी पुरुष का प्यार और सहारा पाना अत्यंत आवश्यक होता है। फिर वह सहारा पति हो या बेटा, लेकिन वह सहारा विवाह से ही मिलता है और जब विवाह हो जाता है। तब परिवार बन जाता है। तो इसलिए भी उषा प्रियंवदाजी ने 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उपन्यास में मिस शास्त्री के माध्यम से कहा है कि स्त्री के जीवन के लिए किसी पुरुष का प्यार और सहारा पाना अत्यंत आवश्यक होता है। इसके सिवा उसका जीवन अधूरा और अभावग्रस्त रह जाता है। पुरुष हीन जीवन जीनेवाली स्त्रियों का मानसिक स्वास्था भी ठीक नहीं रह सकता। इसलिए समाज में परिवार का होना कितना आवश्यक होता है यह समझाता है।

संक्षेप में यही कह सकते कि संयुक्त परिवार में रहनेवाले व्यक्ति को बाहर भीतर दोनों ओर आर्थिक लडाई लढनी पडती है इसी प्रकार परिवार के भीतर पारिवारिक उलझनों से शान्ति नहीं मिल पाती। परिवार में धन कमाने का काम पुरुषों का है। लेकिन आजकल आर्थिक समस्या के कारण नारी भी काम करने लगी है। इसलिए उषा प्रियंवदाजी ने प्रस्तुत 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उपन्यास में 'सुषमा' के माध्यम से कहा है -- सुषमा बडी बेटी होने के कारण अकेली कमा रही है, माता-पिता, भाइयों को नौकरी नहीं, घर में दो बहने, परिवार में इतने सदस्य है मगर आर्थिक कमी के कारण आपस में कोमल सम्बन्ध नहीं है। सुषमा के पिता बीमार है और दो भाई वह भी छोटे - छोटे होने के कारण परिवार में सुषमा पर ही परिवार की जिम्मेदारियाँ होने के कारण सुषमा स्वंय कमाती है।

---

१ उषाप्रियवंदा - पचपन खम्भे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण, १९७६, पृ.६७।

दूसरी बात सुषमा और माँ के आपसी सम्बन्ध भी ठीक नहीं है। माँ अपनी बेटी के प्रति सामान्यता माँ का-सा व्यवहार नहीं कर पाती । इसलिए सुषमा अपने परिवार से सन्तुष्ट नहीं है विमाता के व्यवहार से उसे दु:ख होता है और परिवार के बन्धनों में इतनी बंधी है कि वह अपने को अलग ही नहीं कर पाती । तो पचपन खम्में लाल दीवारें ' उपन्यास में संयुक्त परिवार का रुप व्यापकतासे दिखायी देता है परंतु छोटे और नाभिक परिवारों को संदर्भ में केवल संकेत ही दिया है ।

विवाह --

स्टष्टि के निर्माणक इकाई स्त्री एंवम पुरुष अपने आप में पूर्ण होते हुए भी अपूर्ण है । पूर्ण बनाने के लिए उन्हें एक दूसरे की अत्यन्त आवश्यकता होती है जैसे बालकों के प्रति माता-पिता के विविध दायित्व होते है । विवाह का दायित्व इन सभी दायित्वों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं सबसे बडा दायित्व है । युग्मेच्छा की पूर्ति,सन्तोनोत्पति,दाम्पत्य एवं पारिवारिक जीवन व्यतीत करने के लिए ' विवाह ' यह प्रथा आरम्भ की गई है । समाज में परिवार के लिए विवाह एक अनिवार्य संस्था है । विवाह मनुष्योंमें अनेक सद्गुणों का विकास करता है और उनमें सर्व मुख यह है कि विवाह के पश्चात् पति-पत्नी दोनों में ही, एक दूसरे के प्रति प्रेम भाव के कारण आत्म-त्याग की भावना विकसित होती है । [१०] विवाह से स्त्री को आर्थिक एवं शारीरिक आधार मिलता है । विवाह को एक आदर्श एवं धार्मिक संस्कार माना है,जो पारिवारिक जीवन के लिए अनिवार्य है,किन्तु पश्चिमी सभ्यता एवं शिक्षा तथा आर्थिक विषमता से प्रभावित व्यक्तियों सामाजिक परम्पराओं के प्रति तीव्र आक्रोश प्रकट करते हुए विवाह-संस्था का घोर विरोध करना शुरु कर दिया है । --' पचपन खम्में लाल दीवारें ' उपन्यास में उषा प्रियंवदाजी ने कुछ मूलभूत पारिवारिक और वैवाहिक समस्याँ को उठाया है । बडी आयु होने पर

---

१० रवीन्द्रनाथ मुकर्जी - सामाजिक विचारधारा का के गाँधी तक, सरस्वती सदन,मसूरी,१९६५ । उद्धृत पृ.८२ पर

जब लड़की का विवाह नहीं होता तो आसपास के लोग पूछने लगते हैं जैसे मीरा दीदी सुषमा से कहती है --` तुम शादी क्यों नहीं करती, सुषमा ? तुम देखने में अच्छी हो,कुलीन परिवार से आयी हो । मुझे मालूम है कि तुम्हें कुछ पारिवारिक कठिनाइयाँ हैं,पर तुम अपने जीवन का क्या कर रही हो,इसे तो देखो ।`[११] पर जब पढ़ी लिखी लड़की आर्थिक रुप से स्वतंत्र हो जाती है तभी उसके सामने यह प्रश्न उपस्थित हो जाता है कि क्या विवाह आवश्यक ही है । इस संदर्भ में `पचपन खम्मे लाल दीवारें` की सुषमा कहती --` अच्छा मीरा दी,आप भी क्या यही मानती हैं कि विवाह होना ही चाहिए ? मेरे पास तो सभी कुछ है,आर्थिक रुप से स्वतंत्र हूँ, जो चाहूँ कर सकने में समर्थ हूँ ।`[१२] तो उषाजी ने उपन्यास में विवाह का विरोध करते हुए उत्तर भी दिया है ।

विवाह करने का उद्देश्य यही होता है कि पति-पत्नी सुख दु:ख में साथ रहेंगे, एक दूसरे को सहारा देंगे और सुन्दरसा परिवार बनाएंगे । आजकल ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो रही है कि नारियों को भी धन कमाने हेतु कार्य करना पड़ता है । यदि कोई नारी काम करने के लिए बाहर निकलती है तो कम से कम सुबह और शाम वह अपने परिवारवालों से मिलती है परन्तु आजकल नारियाँ ज्यादा धन कमाने हेतु नौकरी करने के लिए घर छोड़कर दूर चली जाती है जिससे उनका जीवन नीरस और निराशामय हो जाता है । जिसका संदर्भ `पचपन खम्मे लाल दीवारें` उपन्यास की मीनाक्षी के माध्यम से मिलता है । मीनाक्षी अपने नौकरी के कारण अपने परिवार से दूर है इसलिए वह कहती है कि --` मैं अपनी जिन्दगी से पूरी तरह ऊब गयी हूँ, लेक्चर्स और ट्यूटोरियल्स में बँधी उसकी जिंदगी संकुचित है । इस जिन्दगी से दूर जाने के लिए वह शादी का रास्ता अपनाती है कहती है -- विवाह करके एक नई,अपरिचित दुनिया में प्रवेश करुँगी । वे हमेशा पार्टी और बीअर की ही बाते करते हैं ।`[१३]

---

११ उषा प्रियंवदा `पचपन खम्मे लाल दीवारें` राजकमल प्रकाशन,तृतीय संस्करण दिल्ली,१९७६,पृ.६९ ।

१२ - वही - ,, पृ.६९ ।

१३ उषा प्रियंवदा `पचपन ... दीवारें -- राजकमल प्रकाशन,तृ.सं.१९७५ - पृ.४१ ।

परिवार एक ऐसा बन्धन है जिसमें नारी एक बार बंधी तो वह सदैव के लिए बंधी हो जाती है। मनुष्य अपने जीवन की सम्पूर्णता परिवार में अर्जित करता है। पारिवारिक सम्बन्धों की अवहेलना कोई भी मनुष्य नहीं कर सकता। परिवार से मनुष्य को सब कुछ प्राप्त होता है। जैसे माता-पिता, भाई-बहन ये एक ही परिवार के विभिन्न शरीर अवयव है। वैसे 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उपन्यास में 'सुषमा' का परिवार दिखाई देता है। सुषमा अकेली सभी परिवार का भार सँभालती है लेकिन कभी भी वह अपने भाई-बहन या माता-पिताजी को सताती नहीं या उनके साथ क्रूर व्यवहार भी नहीं करती तो अच्छे स्नेह संबंध से बड़े लाड प्यार से भाई-बहन के साथ रहती है। इसलिए सुषमा की नैतिकता उनके परिवार में दिखाई दी है वह नील से कहती है कि --"पहली बात तो यह है कि मेरी बहुत जिम्मेदारियाँ है। तुमसे तो कुछ भी छिपा नहीं है। पक्षाघात से पीड़ित बाबू, दो बहने और भाई सब मुझे ही करना है।"[१२] तो उषा प्रियंवदाजी ने 'पचपन खम्भें लाल दीवारें' उपन्यास में सुषमा जैसी युवती परिवार के प्रति कितनी अधिक समर्पित है यह दिखाया है।

आधुनिक युग में माता-पिता पुत्र के संबंधो क्रान्तिकारी परिवर्तन लक्षित हो रहा है। आज की वैज्ञानिक परिस्थितियों में नारी का मातृत्व दिनों दिन क्षीण होता जा रहा है। पश्चिमी देशों की तरह यहाँ भी शिक्षित नारिया, स्वतंत्र रुपसे आजिविका चलानेवाली नारियाँ अधिक सन्तोनोत्पादन को अपने व्यक्तित्व के विकास या अपने कार्यमें बाधक समझने लगी है। उषा प्रियवंदाजी ने प्रस्तुत 'पचपन खम्भें लाल दीवारें' उपन्यास में मीरा दीदी के परिवार को छोटा दिखाया है। जैसे -- मीरा दीदी उनके पति और एक ही बच्चा तो इतनाही उनका परिवार छोटा दिखाई पड़ता है। वैसे ही दुर्गा दी, मिस शास्त्री आदियों का भी छोटापरिवार है। तो आज कीपरिस्थितियों में मातृत्व, पुत्रत्व और पितृत्व संबका निरन्तर- ह्रास होता जा रहा है इसलिए पारिवारिक संबंध अपना नया रुप धारण कर रहे है।

---

१४ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भें लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, १९७६, तृतीय संस्करण दिल्ली, पृ.१९।

एक पत्नी, माँ, मामी, चाची, ताई आदि अनेक प्रकार कीसंबंधों को निभाती है। तो इन सब बातों का विवेचन करना भी जरुरी होता है। परंतु मुख्यत: परिवार पति-पत्नी से ही बनता है, क्योंकि पति-पत्नी अत: दम्पत्ति।

दाम्पत्य जीवन --

दाम्पत्य का अर्थ पति-पत्नी का जोडा। 'पचपन खम्मे लाल दीवारें', उपन्यास में दाम्पत्य जीवन पर भी प्रकाश दिखायी देता है। जैसे 'सुषमा' के परिवार मेंचाहे सुषमा के माता की सारी इच्छाएँ पूरी नहीं हो फिर भी सुषमा के माता-पिता दाम्पत्य सम्बन्ध में बन्धे अपना जीवन गुजार रहे है। दाम्पत्य ही परिवार का हेतू है। नारी और पुरुष के पारस्पारिक आकर्षणने साहचर्य की भावना को जन्म दिया और विभिन्न समाजों में इस साहचर्य की भाव को विवाह के रुप में स्थायित्व प्रदान किया जैसे 'पचपन खम्मे लाल दीवारें' उपन्यास में नारायण का विवाह कर उन पति-पत्नी को सदैव, सदैव के लिए दाम्पत्य सुत्र मेंबाँध दिया जाता है। इसी प्रकार से 'पचपन खम्मे लाल दीवारें' उपन्यास में एक और दाम्पत्य नीरु और सुमाष दोनों का विवाह कर देते है और उनको भी दाम्पत्य जीवन में बाँध दिया जाता है। वैसेही और एक मीरा दी और उनके पति शिशिर का भी दाम्पत्य जीवन दिखाई देता है।

हिन्दी उपन्यास में पारिवारिक चित्रण के अंतर्गत दाम्पत्य जीवन पर सर्वाधिक ध्यान केन्द्रित किया गया है। परंतु आज प्राचीन मूल्यों के बदल जाने के कारण अध्यात्मीक को छोडकर भौतिकवाद पर आस्था रखने के कारण दाम्पत्य जीवन के दो रुप हिन्दी उपन्यास में देखने को मिलते है। सफल दाम्पत्य जीवन। असफल दाम्पत्य जीवन। 'पचपन खम्मे लाल दीवारें' उपन्यास को दृष्टि में रखकर हम थोडा विस्तार से इसका विवेचन करेंगे कि यह कहाँ तक 'पचपन खम्मे लाल दीवारें' उपन्यास में दिखाई देता है।

सफल दाम्पत्य जीवन --

भारतीय परिवारों में सफल दाम्पत्य जीवन व्यथित करने के लिए आरंभ से ही कन्या को शिक्षा दी जाती है। जैसे ` सुरेश सिन्हा ` हिन्दी उपन्यासों में नायिका की परिकल्पना ` में सफल दाम्पत्य जीवन के संदर्भ में कहा है -- सफल गृहिणी बनकर अपना परिवार संभालना ,अपने पति को सुख-संतोष प्रदान करना और अपनी सन्तान का भविष्य बनाना तथा संवारना हर लड़की अपना कर्तव्य समझती है और सद्गृहिणी बनने का प्रयत्न करती है। नारी जीवन की सफलता उसके परिवार की सफलता से ही मापी जाती थी। `[१५] परन्तु यह बात केवल पत्नी के लिए ही लागू नहीं होती तो सफल दाम्पत्य जीवन बीताने के लिए पति को भी आदर्शों का पालन करना पडेगा। जिस परिवार में पति-पत्नी परस्पर श्रध्दा और प्रेम रखते है तो वहाँ सफल दाम्पत्य जीवन दिखायी देता है जैसे` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में नारायण का परिवार सुखी परिवार की श्रेणी में आता है। पति-पत्नी परस्पर प्रेम और श्रध्दा रखते तथा उनमें वैचारिक एकता भी दिखाई देती है। इस कारण यह परिवार सफल दाम्पत्य जीवन के रुप में माना जाता है। सुषमा के परिवार में उसके माता-पिता का दाम्पत्य सफल ही है। यद्यपि आर्थिक कारणों के कारण उस परिवार में बहुत सी समस्यायें पैदा हो जाती है। लेकिन वह भी समस्या परिवार अत्यंत प्यार से सुलझाने के कारण उनके परिवार में सफल दाम्पत्य जीवन दिखायी देता है। वैसे ही नारायण के पिता वकिल साहब का परिवार आर्थिक रुप से परिपूर्ण और प्रतिष्ठित ऐसा सफल दाम्पत्य जीवन दिखायी देता है। सफल दाम्पत्य जीवन के लिए सिर्फ यह ही आवश्यक नहीं कि पति-पत्नी एक ही स्थान पर एकही छत के नीचे रहे तभी उनका सफल दाम्पत्य जीवन माना जाएगा परन्तु कभी-कभी पति-पत्नी दूर रहते है फिर भी उन्हें इतना विश्वास और श्रध्दा होती है कि दूर रहकर भी वह प्रेम की पक्की डोर में बंधी रहती है। जैसे --

---

१५ सुरेश सिन्हा - हिन्दी उपन्यासों में नायिका की परिकल्पना - अशोक प्रकाशन, दिल्ली, १९६४ , पृ.१६३ ।

' पचपन खम्भे लाल दीवारें ' उपन्यास की मीरा दी को तो हम देखेंगे की उनके पति दूर है बहुत लम्बे समय से आये भी नहीं कार्य के वश नही आ पाये एक बच्चा पर सफल दाम्पत्य जीवन की श्रेणी में ही थे आते है इसलिए मीरा दी कहती है ---

' मेरी शादी को तेरह साल हो गए है और तब भी जब तक शिशिर घर नहीं लौट आते, मैं जैसे प्राणहीन रहती हूँ, एक शून्य में साँसे लेती हुई। जब वह सामने का गेट खोलकर अन्दर आते है, तो कभी-कभी दिल ऐसे धड़कता है, जैसे मैंने उन्हें जाना ही न हो। ' १६

ऐसा देखा गया है अनमेल विवाह समस्या के रुप में आता है और ऐसा भी माना जाता है कि अनमेल विवाह के अकसर परिवार में दाम्पत्य जीवन सफल नहीं हो पाता परंतु यह बात भी गलत है श्रध्दामयी प्रेम के कारण अनमेल विवाह भी सुखद सीध हो सकता है। ' पचपन खम्भे लाल दीवारें ' उपन्यास में नील सुषमा सेपाँच साल छोटा है फिर भी परस्पर दोनों में बहुत प्यार है। मुझे ऐसा लगता है यदि यह विवाह हो जाता तो सुषमा और नील का दाम्पत्य जीवन सफल ही रहता। इसी ही प्रकार से --' पचपन खम्भे लाल दीवारें ' उपन्यास में एक परिवार और है --' स्वाति का। स्वाति सुषमा की सहेली है अपने अपने से अधेड़ और धनवान आदमी से विवाह किया है यह अनमेल विवाह ही है लेकिन स्वाति अपने परिवार में सुखी है। तो अनमेल विवाहों में सफल दाम्पत्य जीवन नहीं दिखायी देता पर इसका दाम्पत्य जीवन सफल ही है। क्योंकि पति-पत्नी दोनों में वैचारिकता समझदारी है और सफल दाम्पत्य जीवन का प्रमाण इस बात से दिखाई देता है कि वह विवाह के बाद नौकरी छोड़कर अपने पति के पास ही रहती है।

इस प्रकार से हम कह सकते है कि वासना के आधार पर पवित्र प्रेम ही सफल दाम्पत्य जीवन की आधारशिला है। पति-पत्नी के बीच पारस्पारिक समन्वय, सामजंस्य आदि का होना अनिवार्य है। अन्यथा उसकी गृहस्थी रूपी स्त्री गाडी सुचारु रुप में नहीं चल सकती।

---

१६ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, १९७६, तृतीय संस्करण, दिल्ली, पृ.६९।

इस प्रकार सार रुप में यही कहा जा सकता है कि दाम्पत्य जीवन की सफलता पति-पत्नी के पारस्पारिक स्नेह और सुहाग के आधार पर ही है।

असफल दाम्पत्य जीवन --

नारी जीवन का मूल्यांकन उसके दाम्पत्य जीवन की सफलता के आधार पर किया जाता है। समाज में प्रारम्भ से ही कन्या को यह शिक्षा दी जाती है कि वह विवाह पश्चात् पातिव्रत्य-धर्म का निर्वाह करतो हुई आदर्श जीवन व्यतीत करे, पर दुभार्ग्य से भारत में अधिकांश परिवार दाम्पत्य जीवन में माधुर्य का अनुभव नहीं कर पाते। परम्परागत रुढियों के कारण वैसे ही दाम्पत्य जीवन में सुख एवं आशा की किरण कम दिखाई देती, पाश्चात्य सभ्यता एवं अल्प शिक्षा ने नारी को उच्छृंखलता की ओर बढने में और सहायता दी। दाम्पत्य जीवन में सुख-संचार के लिए आवश्यकता है कि पति-पत्नी में वैचारिक एकता, स्वभावगत साम्य और गुणों में सामजंस्य हो, किन्तु वैवाह्कि कुरीतियों के इन गुणों के स्थानपर धन-सम्पत्ति को अधिक महत्व दिया गया और भिन्न-भिन्न विचार वाले युवक-युवतियों को विवाह-सूत्र में बाँध दिया गया, अत: इसका परिणाम सुखद सिध्द नहीं हो सका।

असफल दाम्पत्य जीवन के अनेक कारण होते है। जैसे अनमेल विवाह, पति-पत्नी में वैचारिक एकता का अभाव, पारस्पारिक दुर्व्यवहार स्त्री की शिक्षा, पति सेवा एवंम निष्ठा का आभाव, पुराने एवंम नये विचारों का संघर्ष कभी-कभी संयुक्त परिवार में सास और ननंद के कारण भी संघर्ष होता था जिसके कारण पति-पत्नी सफल दाम्पत्य जीवन से असफल हो जाते थे। ` पचपन खम्भें लाल दीवारें ` उपन्यास में जितने भी दाम्पत्ती है उनकी दाम्पत्य जीवन के संदर्भ में ऐसा कोई कारण नजर नहीं आता। तभी पति का पत्नी के प्रति अशिष्ट व्यवहार या पत्नी का पति के प्रति अशिष्ट व्यवहार करने के कारण दाम्पत्य जीवन में दरार पड जाती है। सुषमा की माता भी अपने पति के सामने उल्टा सीधा बोलकर, उनका सम्मान नहीं करती जिसके कारण पति बहुत दु:खी हो जाते है तो सफल दाम्पत्य जीवन का यह शुभ

लक्षण नहीं है। ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में मिसेज प्रसाद सुषमा के कॉलेज में प्राध्यापिका है उनके स्वभाव से पता चलता है कि वह कुछ उच्छृंखल स्वभाव की है लेकिन सामंजस्य उनकी स्वभाव में है ही नहीं शायद इसी कारण वह पति को छोड़कर नौकरी कर रही है परंतु आज भी वह अपने पति को भूली नहीं है और विस्तार से पूर्ण रूप में उसके लिए केवल एक ही विषय होता है पति की बुराई करना। इस संदर्भ में --

` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास की सुषमा कहती है कि --` ऐसे तो मिसेज प्रसाद को देखिए -- क्यों वह अपने पति को छोड बैठी है। स्टाफ-रूम में उनकी बुराइयों के अलावा उन्हें कुछ और वार्तालाप का विषय नहीं है। ` [१७]

यह असफल दाम्पत्य जीवन का सुन्दर उदाहरण है। आज-कल रोटी-रोजी के लिए नारियों को भी काम करना पड़ता है जिससे भारतीय परिवार छिन्न-भिन्न होने लगे है। ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` की मीरा दीदी का परिवार भी असफल माना है क्योंकि पति के बिना वह अकेला जीवन जी रही है अकेलापण उसको खाता है। तेहरसाल से नौकरी के कारण उसके पति बाहर है और वह घर नहीं आये।

इस प्रकार से ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में मीरा दी का परिवार जो है थोडासा असफल दाम्पत्य जीवन के अंतर्गत आता है।

उपर्युक्त विवेचन से प्रकट है कि भारतीय परिवारों में दाम्पत्य जीवन छिन्न-भिन्न हो रहा है। उषाजी ने उनका तथातथ्य रूप अंकित किया है। जिनके आधार पर सामाजिक विघटन के निश्चित मानक निर्धारित किये जा सकते है।

<u>दाम्पत्येत्तर सम्बन्ध --</u>

दाम्पत्य सम्बन्ध के अतिरिक्त भारतीय परिवार में और ऐसे अनेक सम्बन्ध होते है, तो पारिवारिक सदस्यों को सुख और शान्ति के स्नेह-सूत्र में बाँधे रखते है।

---

१७ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, तृतीय संस्करण १९७६, दिल्ली, पृ.६९।

अपने सजातीय बंधु-बांधवों को स्वजन तथा आत्मीय स्वीकार करता है, फिर भी परिवार की इकाई में इन लौकिक संबन्धों की एक सुनिश्चित सीमा निर्धारित कर ली गई है। ऐसे पारिवारिक संबंध है।

पिता एवं संतान का सम्बन्ध --

विवाह के प्रयोजनों में मुख्य है -- सन्तानोत्पादन। बिना संतान के मनुष्य अपूर्ण रहता है। संतान के बाद परिवार बनता है। विवाह के बाद तो केवल 'दम्पत्ति' होते है। परिवार का सही अर्थ संतान द्वारा ही व्यक्त होता है। धार्मिक विश्वासों के अनुसार पुत्र-प्राप्ति आवश्यक माना गया है। अति प्राचीन काल में पुत्र-प्राप्ति के लिए देव-पूजन, नर-बलि, पुत्रेष्टि यज्ञ एवं औषधि आदि का उपयोग किया जाता था। पिता शब्द का अर्थ है पालन-पोषण एवं रक्षण करने-वाला और पुत्र शब्द का अर्थ है जो पितरों को पुं नामक नरक से पिण्डदान करके त्राण दिलानेवाला। जो केवल सामाजिक नियम नहीं संस्कारगत नैतिक नियम भी है। संतान की असहायावस्था में पिता उसका भरण एवं रक्षण करता है तो युवा होने पर संतान का कर्तव्य भी हो जाता है कि वह अपने पिता का सम्मान करके अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करें।

पुत्र-पुत्री के सम्बन्ध में सामाजिक विचार एवं मान्यतायें भारतीय, हिन्दू समाज का रुप अनेक विशिष्टतायें लिए हुए है। पुत्र को पुत्री की अपेक्षा अधिक मान दिया जाता है। पुत्री का जन्म अपशकुन माना जाता है और पुत्र के जन्म पर बधाइयाँ होती है। यह भारतीय समाज की विकृति है। लेकिन समयानुसार भारतीय नव-जागरण युग में कुछ परिवर्तन अवश्य हुआ है। पुत्र-पुत्री दोनों के जन्म में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है। पुत्री भी पुत्र के समान ही है। उसने अपनी योग्यताओं द्वारा सिध्द कर दिखाया है कि वह पुत्र से श्रेष्ठ है अर्थात कर्म प्रथम है, वह चाहे पुत्र करे या पुत्री। इस प्रकार वह समाज में आदर की पात्रा बन गई है। 'पचपन खम्भें लाल दीवारें' में उषा प्रियंवदाजी ने इस संबंध में विचार व्यक्त करते हुए लिखा है नायिका सुषमा परिवार के दायित्वों को पूरा करती है। परिवार के समक्ष वह

अपने भविष्य की चिन्ता भी नहीं करती । वह कहती --" अगर मैं सबसे बड़ा लड़का होती तो क्या न करती ? उसी तरह मैं अब भी करती हूँ । इन लोगों के लिए कुछ करके मन में बड़ा सन्तोष सा होता है । अपने लिए तो सभी करते हैं । छोटे भाई-बहनों के लिए कुछ कर सकूँ उस योग्य भी तो पिताजी ने ही बनाया है ।"[१८] इतना अच्छा प्यार भरा संबंध पिता एवं संतान में दिखाई देता है । उनके परिवार में दो ही पुत्र हैं उनका नाम संजय और विनय वे दोनों भी छोटे हैं । इसलिए बड़ी बेटी होने के कारण सुषमा ही घर की सारी जिम्मेदारियाँ सँभालती है ।

सुषमा अपने पिता से बहुत स्नेह करती है और जब पिता उदास हो जाते हैं तो वह उन्हें सांत्वना देती है फिर भी जब वह निरपेक्ष भाव से सोचती है तो उसके मन में पिता के प्रति भी कुछ शिकायतें जाग उठती हैं और वह सोचती है " .... यदि पिताजी चाहते तो क्या उसका विवाह नहीं कर सकते ? लोग लाख प्रयत्न कर बेटी के ब्याह का सामान जुटाते हैं, क्या उसी के पिता अनोखे थे ? परन्तु वास्तव में उसके पिता ने यह चाहा ही नहीं था कि सुषमा की शादी हो । क्योंकि सुषमा ही उनका एकमात्र आधार थी । वह जब एम.ए.फाइनल में थी तब तो उसकी शादी करीब-करीब तय हो गई थी । मामा बीच में पड़े थे ,पर पिताजी ही ढील दे गये ।"[१९] तो परिवार में ज्यादातर पुत्र पिता के संबंध से पिता पुत्री का ही सम्बन्ध दिखाई देता है।

सुषमा जब घर जाती है तो उससे एक विशिष्ट प्रकार का व्यवहार किया जाता है जब की वह और भाई-बहनों की तरह सहज रूप में रहना चाहती है । परंतु कोई भी उसे काम नहीं करने देता । सुषमा को कोई अच्छा नहीं लगता और वह अपने को केवल एक अर्थ प्राप्ती का साधन मात्र लगती है उसे लगता है कि इस घर में केवल एक पिता ही है जो उससे स्नेह करते हैं वह भी अपने पिता का विशेष ध्यान रखते हुए

---

१८ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन,तृतीय संस्करण ,१९७६,दिल्ली,पृ.११ ।

१९ - वही - ,, पृ.३६ ।

उन्हें पान लगाकर देती है। उन्हें कॉलेज की बातें बताती है, सुषमा की इस व्यवहार से पिता को थोडा राहत और शांति मिलती है। सुषमा को ऐसा लगता है कि जैसे मेरी बातों से पिताजी को कुछ संतोष मिल रहा है और उनके चेहरे से चिंता की रेखाएँ कम होती जा रही है। इसीही परिवार में सुषमा की बहने जो जिनका नाम निरुपमा और प्रतिमा है वह दोनों सुषमा की तरह माकूक नहीं है वह अपने पिता से अधिक बात भी नहीं करती उनका ख्याल भी नहीं रखती पिता को अपनी इन बेटियों के व्यवहार से दु:ख होता है।

` पचपन खम्में लाल दीवारें ` में और एक पिता एवं संतान का सम्बन्ध है। जो पिता पुत्र में है -- वकील साहब के बेटे नारायण और नारायण का बेटा जिसका उल्लेख उनके नामकरण के वक्त दिखाई देता। तो इस परिवार में अर्थ प्राप्ति, प्रतिष्ठा सब ज्यादा होकर भी इन लोगों में गर्व नहीं दिखाई देता। नारायण तो अपने बच्चों को बहुत ही लाड-प्यार से खेलता खिलाता है।

` पचपन खम्में लाल दीवारें ` उपन्यास में उषा प्रियंवदाजी ने पिता और संतान के संबंधो को बहुत ही बारीकी से दर्शाया है। यदि पिता संतान के प्रति संबंध कठोर भी होते है तो केवल मजबूरी के कारण ही पिताजी को अपने हृदय पर बडा पत्थर रखना पडता है।

माता एवं संतान का सम्बन्ध --

मातृत्व में ही नारी की पूर्णता है। पुत्र को जन्म देकर नारी अपने पति को भी पुनर्जन्म देती है। इसलिए वह जननी कहलाती है। भारत में विवाहित आनन्द का चरम रुप पुत्र-प्राप्ति में ही माना जाता रहा है। सन्तानोत्पत्ति का कार्य नारी के बिना असंभव है। माता का कार्य निर्माण करना है। माँ को मानव का सर्वश्रेष्ठ रुप माना गया है। वह पिता, गुरु, सखा और अनुचर आदि रुपों में कार्य करती है।

माता केवल संतान को जन्म ही नहीं देती है, किन्तु उसके पोषण का

दायित्व भी उसी पर होता है।` विवाह और परिवार द्वारा मानवीय जीवन की धारा को अविच्छिन्न बनाए रखने के लिए यद्यपि पिता और माता दोनों का सहयोग आवश्यक है, किन्तु संतान को नौ मास तक गर्भ में धारण करने तथा प्रारंभिक वर्षों में उसका पालन-पोषाण करने से माता का संतान के साथ पिता की अपेक्षा अधिक घनिष्ठ संबंध होता है। माता देहदात्री होने के साथ ज्ञानदात्री भी है। वह बच्चों की पहली और सबसे बडी गुरु है। माता का काम निर्माण करना है।`[२०] परिवार में माता की इतनी महत्ता होने के कारण वेदों से लेकर आजतक हर युग में माता का गुणगान किया जाता है।

माता के इस महत्वपूर्ण एवं गौरवमय पद को ` उषा प्रियंवदाजी ने भी स्वीकारा है। लेकिन` पचपन खम्में लाल दीवारें ` उपन्यास में माता और संतान संबंध पर अधिक विस्तार से तो प्रकाश नहीं डाला है। फिर भी एक झलक दिखाई देती है जिसमें एक परिवार है उस परिवार में सुषामा के भाई-बहन और उनकी माँ है पैसे की तंगी के कारण माँ हमेशा परेशान सी रहती है। फिर भी उसे अपने बच्चों कीभविष्य की चिंता रहती है इसलिए वे सबके खान-पान, शिक्षा आदि के बारे में चिंतीत रहती है। सुषामा की माँ सौतेली माँ है। इसलिए सुषामा को थोडा बहुत सहना पडता है। जब सुषामा की शादी तय होती है तब सुषामा की माँ ने अफ़सोस प्रकट करते हुए कहा था --` निर्मला को देखो, नौकरी करती है, आराम से रहती है। हमारी सुषामा भी वैसे ही रहेगी। उसे कोई तकलीफ न होगी। उनके रिटायर होने में तब केवल तीन साल बाकी थे और बच्चे छोटे थे। उस समय सुषामा की शादी करने से उनकी सारी आर्थिक व्यवस्था गडबड हो जाती।`[२१] वैसे ऊपरी तौर पर सुषामा की माँ सुषामा की शादी हो, उसका घर हो चाहती है परन्तु घर की जिम्मेदारी के कारण वह शादी नहीं कर सकती सुषामा की माँ सुषामा की

---

२० हरिदत्त वेदालंकार - हिन्दू परिवार मीमांसा, सरस्वती सदन, मसूरी, १९६३, पृ.१६५।

२१ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्में लाल दीवारें ` - राजकमल प्रकाशन, तृतीय संस्करण १९७६, दिल्ली, पृ.३६।

शादी की बात टालने के अनेक बहाने बनाती है। इस विषय पर किसी के पूछने पर वह कहती है --" सयानी लड़की है, कोई बच्चा तो है नहीं जो समझाने बुझाने से मान जाएगी, वह शादी करणे को राजी ही नहीं होती, तो मै क्या करूँ ?" २२

इसके विपरित माँ जब सुषमा की छोटी बहन निरु की शादी के लिए परेशान दिखायी देती है तब सुषमा को यह बात अखरती है। सुषमा ईनामदारी से अपनी नौकरी करती है। माँ द्वारा होस्टल की सेवाओं का लाभ उठाने के सुझाव घर वह गुस्सा हो जाती है। वह लोगों के गलत उदाहरण सामने नहीं रखती, वह माँ को फटकारती है, -" दुनिया क्या करती है यह मेरे सामने न कहो अम्मा।" २३

हर माँ को अपने पुत्र से बहुत ज्यादा स्नेह होता है। वह अपने पुत्र के लिए तन-मन-धन सब कुछ आर्पित करने को तैयार रहती है। माँ अपने पुत्र के भविष्य के संदर्भ में अपने हृदय में सुन्दर सपने संजोग कर रखती है। वह कल्पना करती है की उसका बेटा पढ लिखकर अच्छी नौकरी करेगा, फिर उसका विवाह होगा। सुन्दर सी बहु आएगी परंतु जब यह सपने सच होने वाले होते और लड़का अपने रास्ते से भटक जाता है उस समय माँ परेशान हो जाती है जैसे' पचपन खम्मे लाल दीवारें ' उपन्यास में नील की माँ को पता चलता है कि नील सुषमा से प्रेम करता है तो वह व्याकुल हो उठती है कहती है -- बड़े खानदान की बेटी से शादी करना।"

हर माँ की तम्मना होती है कि बेटे की बहु सुशिल, सुन्दर और गृहकार्यों में निपुण होनी चाहिए और इसी प्रकार का संदर्भ पचपन खम्मे लाल दीवारें ' उपन्यास मे आया है। जिसमें सुषमा की माँ सुमाष के लिए कितने ही लड़की देख चुकी है और जब वे नीरु को देखने सुषमा के घर आती है। सुषमा के घर की सुरुचिपूर्ण सजावट, चलते-फिरते कई नौकर और नीरु का सलज्ज सौन्दर्य, इन सबसे

---

२२ उर्मिला गुप्ता - स्वातंत्र्योत्तर कथा - लेखिकाएँ, ओमप्रकाश, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली-६, प्रथम संस्करण, १९६७, पृ. ३२८।

२३ भिष्म सहानी - राजमित्र भगवती प्रसाद, निदांरिया - आधुनिक हिन्दी उपन्यास - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. २७१, २७२।

वह प्रभावित हो जाती है। सुभाष की माँ नीरु से बहुत से प्रश्न पूछती है। निरुपमा के हाथ से चाय का प्याला छूट जाता है, उसके तब सभी लोग नाराज हो जाते हैं और जब सुषमा की माँ अतिथियों का विचार जानने के हेतु से उनका मत पूछती है तो सुभाष की माँ बडी कुशलता से यह जबाब देती है कि --

"वे जबाब दूसरे दिन दे देंगे।" २४

कभी-कभी माँ अपनी सौतेली संतान से दुर्व्यवहार भी करती है जैसे 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उपन्यास में सुषमा की माँ अपने स्वार्थ के कारण सुषमा के विवाह में रुचि नहीं दिखाती। यदि सुषमा की माँ चाहती तो सुषमा का विवाह नील से हो सकता था परंतु नील के साथ सुषमा के विवाह को माँ ने कभी प्रोत्साहन नहीं दिया इसके विपरीत अपने पेट की लडकी नीरु के विवाह की बात नील से चलाने की इच्छा रखती थी इस प्रकार से घटना से यही पता चलता है कि माँ अपने पेट की संतान को जितना प्यार दे सकती है उतना सौतेली बच्चों को नहीं। जैसे सुषमा के विवाह के विषय पर माँ हमेशा निरुत्साहित हो जाती है। ऐस प्रसंग पर सुषमा की माँ कुछ कोई काम का बहाना बनाकर या कभी वह सुषमा के सिर पर ही सारा दोष डालकर खुद बरी हो जाती है, वह कहती है --'सुषमा की शादी तो अब हमारे बस की बात रहीं नहीं इतना पढ-लिख गयी, अच्छी-नौकरी है और अब तो क्या कहने है, होस्टल में वार्डन भी बननेवाली है। बँगला और चपरासी अलग से मिलेगा, बताओं, इनके जोड का लडका मिलना तो मुश्किल ही है। तुम्हारे जीजा तो कहते है कि लडकी सयानी है, जिससे मन मिले, उसी से कर ले। हम खुशी-खुशी शादी में शामिल हो जायेंगे।" २५ सुषमा की माँ सुषमा के मन को जानती है पर वह मजबूर है। वैसे ही सुषमा की सबसे छोटी बहन प्रतिमा के शादी बारे में माँ कहती है -- नारायण के छोटे भाई अरविंद से प्रतिमा की शादी कर देंगे।" २६

---

२४ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भें लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, तृतीय संस्करण, १९६७, दिल्ली, पृ.८५।

२५ - वही - ,, पृ.१०।

२६ - वही - ,, पृ.४२।

सुषमा की माँ व्यवहारी औरत है। वह सुषमा की शादी एक धनी वकील से करवाना चाहती है इसी प्रकार ब्रजमोहन और निरुपमा के संबंध में सुषमा की माँ साशंक है, इसलिए वह जल्द से जल्द निरुपमा की शादी करा देती है। पर वह फेल हो जाता है और माँ उसका विचार छोड देती है। इस प्रकार वह केवल इज्जत और संपत्ति को ही महत्व देती है। लेकिन सुषमा के प्रति अपना उत्तर - दायित्व निभा न सकने की अपराध भावना से वह ग्रस्त है। सुषमा की जली-कटी बातें सुनकर वह उसे भरे गले से कहती है -- तुमें तो कहने का हक है,कहो। तुम्हारें माँ-बाप ऐसे निकले की अपना फर्ज भी निभा न सके।" २७

उपर्युक्त विवेचन से हम यह निष्कर्ष निकल सकते है कि प्रस्तुत " पचपन खम्में लाल दीवारें" उपन्यास में माँ-बेटी का सम्बन्ध ,उसके आचरण की विसंगतियाँ उसकी मनोवैज्ञानिक जटिलताओं की उपज है फिर भी यदि पिता बीमार हो तो माता अपने बच्चों की परवरिश सतर्कतासे करतो है। संतान को शिक्षा देना,लडका को या लडकी उसकी अच्छी ढंग से परवरिश करते हुए, उनका विवाह कर देना,इन्हीं जिम्मेदारियों को पुकारने का कर्तव्य भी " माँ " करती है।

इस प्रकार उषा प्रियंवदाजी के उपन्यास में जहाँ हमें माँ का ममतामयी रुप दिखाई देता है। वहाँ माँ का दूसरा रुप भी दिखाई देता है जो केवल स्वार्थ की मिट्टी से बना हुआ है। अपने सुख के लिए अपनी पुत्रियों का जीवन खराब करने में भी हिचकती इसके अतिरिक्त माँ का जो श्रध्दामय,प्रेममय और त्यागमय रुप है,उसको भी उन्होंने अपने उपन्यास में दिखाया है।

भाई-बहनों का पारस्पारिक संबंध --

परिवार में पिता के अभाव में भाई का महत्वपूर्ण सम्बन्ध स्थान माना गया है ,क्योंकि वही प्रतिकूल परिस्थिति में बहनों का भरण-पोषण भाई ही करता है।

---

२७ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्में लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन,दिल्ली, तृतीय संस्करण,१९७६,पृ.८४।

भगिनी ' भग ' शब्द से बना है जिसका अर्थ है -- धन,यश ,श्री,ज्ञान आदि है भाई के कारण ही वह सौभाग्य प्राप्त करती है।' २८

जिन परिवारों में पिता कमाते है वहाँ भाई-बहनों का जीवन खेल-कुद और निश्चींतता से गुजरता है। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए परिवार की सभी बच्चों की नजर माता-पिता पर ही टिकी रहती है। लेकिन कुछ ऐसे भी परिवार होते है जहाँ पर पिता कुछ काम-धाम नहीं करते बडी संतान को ही काम करते घर की गाडी को खिंचना पडता है।

उषा जी ने' प्रस्तुत' पचपन खम्भे लाल दीवारें ' में सुषमा का परिवार है जिसमें पिता बिमार और लाचार है सुषमा को ही नौकरी करके घर के सारे उत्तरदायित्व को निभाना होता है इसी कारण सुषमा अपने भाई-बहनों से थोडा अलग हो गई यद्यपि वे चाहती है कि मेरे भी भाई-बहनों के साथ परस्पर मैत्री संबंध रहे परंतु ऐसा नहीं हो पाता। छोटे भाई-बहन सुषमा को विशेष महत्व देते यहाँ तक की जब वे आती है तब सुषमा को लाने के लिए दोनों भाई स्टेशन पर जाते थे। घर पहुँचते ही सभी भाई-बहन सुषमा का बक्स खुलने की प्रतिक्षा में इधर-उधर मँडराने लगते,तब मुस्काराती हुई सुषमा कहती --' संजय की लेदर जैकेट,विनय के लिए सिली हुई कमीजें, निरुपमा के लिए ऊन,प्रतिमा के सलवार कमीजों के कपडे और मैचिग दुपट्टे।' २९

उसी प्रकार जैसे बच्चे पिता की प्रतिक्षा करते है वैसे बहन की प्रतिक्षा करते है।

वैसे ही सुषमा जब खाली बैठी कुछ सोचा करती हो ? तब संजय कमरे में आकर कहता -- ' जीजी, तुम हर वक्त खाली बैठी-बैठी क्या सोचा करती हो ?

---

२८ महेन्द्रकुमार जैन - हिन्दी उपन्यासों में पारिवारिक चित्रण - जैन ब्रदर्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण १९७४,पृ.१५२।

२९ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन,दिल्ली, तृतीय संस्करण ,१९७६, पृ.३५।

मेरा स्वेटर ही बुना करो, मुझे पता है वह अधूरा रह जायेगा ।"[30] सुषमा अपने हिम्मत से अपने भाई-बहनों की पढाई, शादियाँ कराती है । प्रतिमा को वह डॉक्टर की पढाई का सारा इन्तजाम करवाने का आश्वासन देती है । नीरु की शादी भी बडी धूमधाम से करती है । निरु की बिदाई पर सुषमा का प्यार उमड आता है और उसे बेहद दु:ख होता है तो इस प्रकार अपने शादी, सुख चैन का विचार दूर रखकर वह नि:स्वार्थ त्याग भावना से अपना कर्तव्य निभाती है ।

समाज में भाई-बहन प्रतीक के रूप में राखी का त्योहार मनाये जाते है । यह परंपरा से चलता आया बहन-भाइयों का सुखी जीवन के लिए मंगल कामना का अटूट रिश्ता है वैसा ही ' पचपन खम्मे लाल दीवारें ' उपन्यास में नारायण और छोटी बहन प्रभा का संम्बध दिखायी देता है ।

कोई बहन को अपनी भाभी प्यार से, सब मान-सम्मानीत होकर आती है तो घर में सब खुशी ही खुशी अच्छी लगती है । लेकिन नील और उनकी बहन नलिनी दोनों के सम्बन्ध में थोडा झगडा है लेकिन वह प्यार से झगडा होता है । इसलिए यह झगडा कोई दु:ख दायक नहीं है ।

तो प्रेमपूरक सम्बन्धों के कारण साथ ही साथ आर्थिक संघर्ष या अन्य कारणों से भाई-बहन के संबंध घृणा और द्वेष में परिवर्तित होते है लेकिन प्रस्तुत उपन्यास में ऐसा कुछ नहीं दिखाई देता । उषा जी ने अपने ' पचपन खम्मे लाल दीवारें उपन्यास में भाई-बहन के मधुर संबंधों को अच्छे ढंग से चित्रित किया है ।

<u>सुषमा और नील का सम्बन्ध --</u>

सुषमा एक सुंदर, सुगढ एवं आकर्षक मध्यवर्ग की युवति है । एक ओर विकट परिस्थिति होने के कारण जीवन में दु:खी है, तो दूसरी ओर आधुनिक विचारों के कारण वह जीवन के नये संबल पाना चाहती है । अपने नीरस जीवन में

---

३० उषा प्रियंवदा - पचपन खम्में लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन दिल्ली, तृतीय संस्करण १९७६, पृ.४१ ।

कोई संतोषदायक अनुभव न पाकर वह दु:खी ही है। 'सुषमा को प्रेमी नहीं चाहिए था। उसे पति की आकांक्षा भी न थी, पर कभी-कभी उसका मन न जाने क्यों डूबने लगता। अपने परिवार का सारा बोझ अपने ऊपर लिये सुषमा काँपने-सी लगती। तब वह चाह उठती कि दो बाँहे उसे भी सहारा देने को हो, इस नीरवता में कुछ अस्फुट शब्द उसे भी संबोधन करे।'[३१] सुषमा का अकेलेपन और दु:ख से उबारने का काम उसका नील नामक एक मित्र करता है सुषमा को नील के सानिध्य में गहरा सुख और आनन्द मिलता है। नील के प्यार के कारण सुषमा को अपने व्यक्तिगत जीवन के निरर्थकता में खोये हुए वर्षों का एहसास होता है। उन वर्षों का उसे गहरा दु:ख है। और अब तो वहाँ उसके चारों ओर दीवारें खिंच गयी है। ये दीवारें दायित्व ,कुण्ठाओं और पद तथा परिवार की गरिमा है। उसके जीवन में नील के आ जाने के कारण ऐसी हिलोरें उत्पन्न कर दी कि उनके परिणाम की आकांक्षा से सुषमा विचलित हो उठती है। इसलिए सुषमा नील को चाहकर भी, नील को टालना चाहती है। नील के प्रेम और सहानुभूति से बचने के लिए अपने स्वप्नों को रौंदते हुए सुषमा ने कहा --

'उम्र सत्ताईस बरस, घर की गरीब, हिन्दी की टीचर ... कुछ और जानना चाहते है ?'[३२] उसके कण्ठ की तलखी नील को खट्-से लगी। नील और सुषमा की दोस्ती में अनेक विघ्न आने के कारण घर, समाज और पूरा परिवेश सुषमा के सुख के खिलाफ है। नील सुषमा से शादी करना चाहता है परन्तु सुषमा मजबूर है। वह नील को समझा देना चाहती है कि मेरी जिन्दगी खत्म हो चुकी है और मै एक साधनमात्र रह चुकी है। मेरी भावनाओं का कोई मोल नहीं है।

सुषमा बहुत शांती से अपनी परिस्थितियों के बारें में चिंतन करती है। और शांत मन से जैसा भी उसका जीवन है उसको सविकार लेती है। सोचती है कि --

---

३१ घनश्याम 'मधुप' हिन्दी उपन्यास - राधाकृष्ण प्रकाशन,दिल्ली,पृ.१७७।

३२ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भें लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन,दिल्ली, तृतीय संस्करण - १९७६,पृ.३३।

नील के कारण जीवन में जो भावनाओं का तूफान मच गया है अगर नील और उसको जिंदगी से चला जाएगा तो वह फिर अपने को पुरानी प्राचीरों में बन्दी कर लेगी, कॉलेज और हॉस्टल की इमारतों के पचपन खम्भे लाल दीवारें में अपने आप को दफना देगी। सुषमा नील से कहती है --' मेरी मजबूरी समझते क्यों नहीं ' पहली बात तो नील यह कि मेरी बहुत जिम्मेदारियाँ है। तुमसे तो कुछ छिपा नहीं है। पक्षाघात से पीड़ित बाबू, दो बहनें और भाई, सब मुझे ही करना है ....' उसी वक्त नील कहता है कि --' वे जिम्मेदारियाँ मेरी भी होंगी। तुम्हारे भाई-बहनों, सबके लिए सब-कुछ वैसे ही होगा जैसे होता आया है।'[३३] तब सुषमा कहती है --' और कभी तुम भावावेश में, किए गए इस निश्चित पर पछता उठा तो ? सुषमा ने कमरे का एक चक्कर लगाया और कहा --' तुम्हारी अभी आयु ही क्या है। मैं तुमसे इतनी बड़ी भी तो हूँ नील। हमारा विवाह कभी सफल न होगा। मुझे सदा यह विचार डसता रहेगा कि कहीं कोई, बहुत छोटी, बहुत सुन्दर लड़की मुझसे तुम्हें न छीन ले।'[३४]

उसी समय नील क्रोध से कहता है कि --' ठीक है, तुम यहीं रहो, इन पचपन खम्भों में बन्दी होकर। मैं तुम्हारे बहकावे में आ गया था। मैं सोचने लगा था कि तुम्हारे लिये मैं ही सब-कुछ बन गया हूँ। मैंने अब जाना कि तुम्हारे पास खूबसूरत चेहरे के अलावा एक बहुत व्यावहारिक बुध्दि और अपना भला समझनेवाला दिमाग भी है।'[३५] नील से सुषमा को सच्चा प्यार है परंतु वह यह खुले तौर पर स्वीकार नहीं कर सकती इसलिए अपनी विवशता से बहुत चिढ़ है। नील और उसके संबंध को वह उपरी तौर पर छोड देती है। नील के बिना उसका जीवन अर्थहीन होगा यह जानकर भी वह उससे दूर जाने का निश्चय कर लेती है। सुषमा अपने आप को नील के काबिल नहीं समझती क्योंकि दोनों के परिवेश, परिस्थिति, आयु, आदि में काफी अंतर है। लेकिन नील के विदेश जाने की खबर सुषमा को मिलती है।

---

३३ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण, १९७६, पृ.११४।

३४ - वही - ,, पृ.११४।

३५ - वही - ,, पृ.११५।

तो उसका मन द्विधावस्था में पड जाता है। वह उससे मिलबा चाहती है और इयरपोर्ट जाने की सभी तैयारी भी करती है, परंतु फिर वह यकायक न जाने का निर्णय ले लेती है। सुषमा अपने ही विचारों के जाल में फँसती जाती है।

ननंद भाभी के संबंध --

ननंद का अर्थ है पति की कुमारी या विवाहिता बहन। और उसके भी मुल संस्कृत अर्थ में .... सेवा की जाने पर भी प्रसन्न न होनेवाली प्राय: परिवार में ननंद भाभी से असंतुष्ट रहती है। अधिकांश ननंदे भाई तथा भाभी के बीच कलह के बीज बो देती है। ननंद अपनी भाभी को प्रतिद्वन्द्वीनी समझकर उस पर शासन करने का प्रयत्न करती है। लेकिन प्रस्तुत ` पचपन खम्मे लाल दीवारें ` उपन्यास में उषा प्रियंवदा जी ने ननंद भाभी के संबंध को ऐसा नहीं दिखाया है। तो उपन्यास में थोडेसे अंश में ही संबंध दिखाया है। जैसा -- ` सुषमा जब नारायण के बेटे का नामकरण समारोह में उपहार लेकर जाती है उसी वक्त नारायण की बहन प्रभा सुषमा का स्वागत करती है --` नमस्ते दीदी, चलिए, आपको भाभी के कमरें में ले चलू। `[३६]

उसी समय प्रभा ने बच्चे को उठाया और सुषमा की गोद में दे दिया। इसलिए नारायण की पत्नी और उसकी ननंद प्रभा का अत्यंत अच्छासा संबंध दिखाई देता है। तो उपन्यास में इतनाही संबंध दिखाई देता है।

इस प्रकार उषा प्रियंवदा जी ने ननंद-भाभी के कटु एवं मधुर सम्बन्ध को अपने उपन्यास में दिखाया है लेकिन ज्यादात्तर मधुर सम्बन्ध ही ` पचपन खम्मे लाल दीवारें ` उपन्यास में दिखाई देता है।

---

३६ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्मे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण, १९७६, पृ.३७।

बुआ का सम्बन्ध --

परिवार के विभिन्न संबंधोंमें बुआ का सम्बन्ध महत्वपूर्ण होता है। बुआ पिता की बहन होती है और बहुतसे उत्सव ऐसे होते है जिसमें बुआ का स्थान महत्वपूर्ण होता है। तो वैसे ही ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में नारायण की बहन प्रभा, नारायण के बेटे के नामकरण समारोह में दिखाई देती है। तो वही ही जगह पर हो बुआ का महत्वपूर्ण स्थान होता है। उपन्यास में बुआ का विस्तार से चित्रण नहीं हुआ है। बल्कि केवल संकेत मात्र ही दिया है।

देवर भाभी का सम्बन्ध --

देवर का तात्पर्य है, पति का अनुज। सहोदर होने के कारण उसे उपपति भी कहा जाता है। यास्कने उसे दूसरा वर माना है और मनु ने उससे संतान प्राप्ति की व्यवस्था दी है। ` [३७]

प्रस्तुत ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में देवर-भाभी का सम्बन्ध है लेकिन कटु एवं वैमनस्य उसमें नहीं है। जैसे नारायणदादा का छोटा भाई अरविंद है। अरविंद का वर्णन सिर्फ एकही जगह पर चित्रांकित हुआ है। जैसे -- संजय ने कहा ` अम्मा कहती है कि वह अरविंद है न, नारायण दादा का छोटा भाई, ` उससे प्रतिमा की शादी कर देंगे ` [३८] तो उपन्यास में इतना ही अरविंद का वर्णन दिखाई देता है। परन्तु कोई देवर-भाभी का ऐसा कोई संघर्ष के कारण परिवार में या इन सम्बन्धों में दरार निर्माण हो गई है ऐसा नहीं है। ` उपन्यास में और एक पात्र है वह है 'गौरी' उनकी नौकरानी है।

इस प्रकार ` उषा प्रियंवदा जी ` के द्वारा लिखित ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में अर्थ प्रधान समाज का या परिवार का चित्रण अत्यंत सफलता-पूर्वक किया है।

---

३७ महेन्द्र कुमार जैन - हिन्दी उपन्यासों में चित्रित परिवार - जैन ब्रदर्स, पृ.सं.१५९, प्र.सं.१९७४, दिल्ली।

३८ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण, १९७६, पृ.४२।

निष्कर्ष --

उषा प्रियंवदाजी का ' पचपन खम्भे लाल दीवारें ' अपने माता-पिता तथा भाई-बहन के जीवन को सार्थकता देने के लिए अविवाहित रहनेवाली सुशिक्षिता युवती द्वारा त्यागमय जीवन में अपनी अस्मिता की तलाश का उपन्यास है ।

उषा प्रियंवदाजी का ' पचपन खम्भे लाल दीवारें (१९६०) हमारी परिवार संबंधी पारंपारिक मान्यताओं को एक अलग ही दृष्टिकोण से चुनौती देने वाली कृति है । यहाँ न परिवार का विघटन है और न संबंधों का बिखराव । यहाँ चुनौती है परिवार के प्रति पुत्र-पुत्री के दायित्वों में भेद करने की पुरानी परंपरा को । इस परंपरा के अनुसार परिवार की नौका का खेवनहार पुरुष होता है - पिता के रुप में वर्तमान में, तो पुत्र के रुप में भविष्य में । किन्तु नर-नारी समता और नारी की आत्मनिर्भरता के युग में क्या यह मान्यता खोखली नहीं पड गयी है ? नारी क्या अपने माता-पिता, भाई-बहनों की आर्थिक संकटों से घिरी जिंदगी को नयी दिशा नहीं दे सकती ? ' पचपन खम्भे लाल दीवारें ' में उषा प्रियंवदाजी ने सुषमा के माध्यम से इन प्रश्नों के सकारात्मक उत्तरों की एक यथार्थ कथा गूँथी है।

सुषमा लखनऊ के एक ऐसे परिवार की लडकी है, जो अतीत में संपन्न रही है । लेकिन अब वह परिवार अपने पराभव को भी झेल रही है । घर में है ' एक बीमार पिता ... दो बहनें, दो भाई, माँ जो सौतेली है । इन सबको छोडकर परिवार को चलाने के लिए सुषमा नौकरी करने दिल्ली आ गयी । सुषमा की अपनी आशाएं है और सपने है, जो उसको स्वयं के बलबूते पर पूरे करने है । इसीलिए वह नौकरी करती है । दिल्ली में ही उसका परिचय नील से होता है । यह परिचय धीरे-धीरे प्रणय संबंध में बदल जाता है । इस प्रणय भाव के बीच भी सुषमा यह नहीं भूलती कि ' आज जीवन की जिस परिस्थिति में वह है वहाँ उसका विकल्प कुछ नहीं है । वह चाहे भी परंपरा बध्द जीवन में विवाहित जीवन नहीं बिता सकती । '[३९] क्योंकि उसे

---

३९ उषा मंत्री - हिन्दी उपन्यास में पारिवारिक संदर्भ - नेशनल पब्लिशिंग हाउस, २३, दरियागंज, नयी दिल्ली, प्रकाशित प्रथम संस्करण, १९९१, पृ. २२५ ।

परिवार की स्थिति सुधारनी है, दो भाईयों को पढाना, पिता पर इलाज करना, और बहनों की पढाई और शादी करना और इन सबको आर्थिक रुप से स्वतन्त्र बनाना है। इसलिए सुषमा कहती है, `अच्छा मीरा दी, आप भी क्या यही मानती है कि विवाह होना ही चाहिए ? मेरे पास तो सभी कुछ है, आर्थिक रुप से स्वतंत्र हूँ, जो चाहूँ कर सकने में समर्थ हूँ।`[४०] तो सुषमा स्वयं अविवाहित रहकर वह बहुत भोग चुकी है।

इस प्रकार उषा प्रियंवदा जी ने `पचपन खम्भे लाल दीवारें` उपन्यास में परिवार के सभी रुपों, उनकी विशेषताओं, विभिन्न प्रकार के संबंधों पर बहुत ही अच्छी प्रकार से प्रकाश डाला है। बीच बीच में परिवार में उत्पन्न होने वाली सुख और दु:ख के प्रसंगों को भी सफलतापूर्वक चित्रित किया है। परिवार में होनेवाले विभिन्न क्रियाकलाप जैसे शादी विवाह, मुंडन आदि का भी संक्षेप में और संकेतात्मक रुप से चित्रण किया है।

---

४० उषा प्रियंवदा - `पचपन खम्भे लाल दीवारें` राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण, १९७६, पृ.६९।